

## एन.सी.सी. के प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन

अंकित पारीक, डॉ. कल्पना सेन्गर

शोधार्थी, शिक्षा विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

शोध पर्यवेक्षक, प्रोफेसर, शिक्षा विभाग, अपेक्स विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान, भारत।

Corresponding Author: ankitpareek.jaipur@gmail.com

### शोध सार

21वीं सदी में जब विज्ञान प्रगति के उच्च स्तर पर है, जहाँ देश की रक्षा व्यवस्था आधुनिक विज्ञान आधारित हथियारों पर निर्भर हैं। ऐसे में एन.सी.सी. के प्रशिक्षणार्थियों में विज्ञान के प्रति रुचि और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शोधकर्ता ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के एन.सी.सी. के प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति को समझने का प्रयास किया है। इस शोध कार्य का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के एन.सी.सी. के प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के स्तर का आकलन करना तथा क्षेत्र भिन्नता के अनुसार उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के एन.सी.सी. के प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना है। शोध कार्य के लिए शोधकर्ता ने यादृच्छिक विधि से जिला टोंक, राजस्थान के उच्च माध्यमिक विद्यालय के 400 एन.सी.सी. के प्रशिक्षणार्थियों का चयन किया। डॉ. सुखवंत बाजवा और डॉ. मोनिका महाजन के वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैमाने का उपयोग करते हुए, जिसमें (तर्कसंगतता, जिज्ञासा, खुले दिमाग, वैज्ञानिक पद्धति में विश्वास और अंधविश्वास के प्रति औसत) से संबंधित 40 कथन हैं, ऑकड़ों को एकत्रित किया गया और एसपीएसएस द्वारा विश्लेषण किया गया है, जिसमें निष्कर्ष निकाला गया है कि उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांक औसत स्तर से अधिक हैं तथा उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत एन. सी. सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

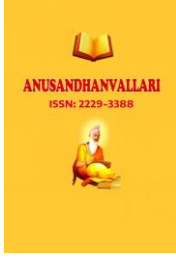
**मुख्य शब्द:** वैज्ञानिक दृष्टिकोण, उच्च माध्यमिक विद्यालय के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थी।

### 1.0 प्रस्तावना

वैज्ञानिक पद्धति का एक आवश्यक घटक वैज्ञानिक दृष्टिकोण है, जिसे सोचने के तरीके से परिभाषित किया जाता है जो जांच, संदेह और नई जानकारी के प्रति ग्रहणशीलता को महत्व देता है। यह एक ऐसी पद्धति को दर्शाता है जो धारणाओं को चुनौती देती है, सत्य की तलाश करती है और पूर्वाग्रहों या पूर्व धारणाओं के बजाय तथ्यों पर निर्णय देती है। केवल वैज्ञानिकों को ही नहीं, बल्कि समस्याओं को हल करने वाले और गंभीर रूप से सोचने वाले किसी भी व्यक्ति को ऐसी मानसिकता की आवश्यकता होती है।

तर्कसंगतता महत्वपूर्ण सोच कौशल को बढ़ावा देती है, जिससे छात्रों को सूचना निष्पक्षता का विश्लेषण करने, पूर्वाग्रहों की पहचान करने और सूचित निर्णय लेने में सक्षम बनाया जाता है। यह छात्रों को चुनौतियों को सीखने और विकास के अवसरों के रूप में देखकर लचीलापन विकसित करने में भी मदद करता है। एक वैज्ञानिक मानसिकता उन्हें प्रयोग करने, अपनाने और बाधाओं को दूर करने, उपलब्धि और आत्म-दक्षता की भावना को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करती है। यह छात्रों को तनाव के कारणों और प्रयासों को समझने में मदद करता है, तनाव को प्रबंधित करने के लिए वैज्ञानिक पद्धति, जैसे कि माइंडफुलनेस तकनीक या व्यायाम को लागू करके, वे अपनी मानसिक और भावनात्मक भलाई में सुधार कर सकते हैं। तर्कसंगतता छात्रों को भावनात्मक और आवेगों के बजाय साक्ष्य और तार्किक तर्क के आधार पर निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करती है। जिज्ञासा एक मौलिक मानवीय गुण है जो हमें अपने आस-पास की दुनिया का पता लगाने, सीखने और समझने के लिए प्रेरित करती है। यह नई जानकारी और अनुभवों को जानने, समझने और खोजने की इच्छा है। नई परिस्थितियों को समझने की इच्छा ही जिज्ञासा का मूल तत्व है। जब हम किसी अपरिचित या अस्पष्ट बात का सामना करते हैं, तो जिज्ञासा हमें उत्तर खोजने और हमारी समझ में अंतर को पाटने के लिए प्रेरित करती है। हम जो देखते हैं उसके पीछे अंतर्निहित कारणों और तंत्रों को जानना चाहते हैं। “क्यों” और “कैसे” को उजागर करने का यह अभियान वैज्ञानिक जांच, समस्या-समाधान और नवाचार को बढ़ावा देता है। खुली मानसिकता एक जटिल और बहुआयामी अवधारणा है जिसका मनोविज्ञान और दर्शनशास्त्र में बड़े पैमाने पर अध्ययन किया गया है। इसे आम तौर पर नए विचारों और अनुभवों पर विचार करने और नए सबूतों के सामने अपनी मान्यताओं को संशोधित करने की इच्छा के रूप में समझा जाता है। नई चीजों और विचारों की इच्छा खुलेपन का एक महत्वपूर्ण पहलू है। इसमें हमारे आस-पास की दुनिया में जिज्ञासु और रुचि होना, और नई चीजों को आजमाने और नई चीजें सीखने के लिए तैयार रहना शामिल है। इससे व्यक्तिगत विकास, भूमि विकास, साथ ही दुनिया की बेहतर समझ हो सकती है। वैज्ञानिक विधि छात्रों को स्थितियों का विश्लेषण करने, समस्याओं की पहचान करने, परिकल्पना तैयार करने और साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने का उपयोग करके समाधान का परीक्षण करने के लिए प्रोत्साहित करती है। वैज्ञानिक पद्धति छात्रों को अपनी भलाई को समझने और प्रभावित करने में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाती है। प्रयोगों का संचालन करने और परिणामों का विश्लेषण करने से, वे अपने जीवन पर नियंत्रण की भावना प्राप्त करते हैं और सकारात्मक परिवर्तन करने की अपनी क्षमता में आत्मविश्वास विकसित करते हैं।

साथ ही शिक्षा मनुष्य के आचरण को, व्यवहार को, क्रिया-कलापों को, उचित और समाजोपयोगी बनाती है। उसमें रचनात्मकता और सृजनात्मक शक्ति का विकास करती है तथा शिक्षा से सामाजिक परिवर्तन सम्भव है, शिक्षा से समाज में जड़ता नहीं आती है। शिक्षा के द्वारा व्यक्ति अपने आपको वातावरण से अनुकूलन करने में समर्थ ही नहीं होता वरन् वातावरण और प्रकृति पर विजय प्राप्त करने का भी प्रयत्न करता



है। शिक्षा ही व्यक्ति को असत्य से सत्य की ओर, अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने के लिए प्रेरित करती है, प्रोत्साहित करती है और निर्देशित करती है। शिक्षा ही मानव जीवन में उदारता उच्चता, उत्कृष्टता और पवित्रता लाती है। शिक्षा ही सामाजिक चेतना को जागृत करती है। सामाजिक धरोहर की रक्षा करती है। आगामी पीढ़ी को उसका हस्तान्तरण करती है और उसका विकास करती है। देश काल और समय और परिस्थिति के अनुसार शिक्षा में परिवर्तन आवश्यकता है। कभी-कभी ये परिवर्तन क्रान्तिकारी रूप में भी होते हैं।

आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी का युग है। जिसने समस्त विश्व को ड्राइंग रूम में ला दिया है। सूचना प्रौद्योगिकी के कारण जनसंचार माध्यमों का अपूर्व विकास हुआ। जनसंचार माध्यमों में इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों का विशेष स्थान है। इलैक्ट्रॉनिक जनसंचार माध्यमों से घर बैठे हर प्रकार की जानकारियाँ, सूचनाएँ तथा मनोरंजन उपलब्ध करा दिया है। इन माध्यमों ने हर आयु वर्ग को प्रभावित किया है। आज का युवा वर्ग तो मानों इसके बिना जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता। इलैक्ट्रॉनिक माध्यमों ने उसके जीवन का अंदाज बदल दिया है। वैज्ञानिक दृष्टिकोण को सुदृढ़ बनाने में इलैक्ट्रॉनिक मीडिया एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। अतः इन्हीं बातों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्ता ने अपना शोध का विषय 'एन.सी.सी. के प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति एवं राष्ट्रीय चेतना का अध्ययन' को चुना।

## 2.0 समस्या कथन :-

“एन.सी.सी. के प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन ”

## 3.0 सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

कुछ प्रमुख शोध कार्यों का अध्ययन शोधार्थी ने किया है जो कि इस प्रकार से है-

**भान, सूरज और खंडूरी, गीता (2025)** ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच वैज्ञानिक दृष्टिकोण का एक अध्ययन शीर्षक पर अपना शोध कार्य किया। उनके अनुसार 21वीं सदी में जब विज्ञान प्रगति के उच्च स्तर पर है, ऐसे में छात्रों में विज्ञान के प्रति रुचि और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शोधकर्ता ने माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समझने का प्रयास किया है। इस शोध कार्य का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण के स्तर का आकलन करना तथा लिंग, धारा, स्थानीयता, संस्थान के प्रकार, कक्षा, माध्यम और परिवार के अनुसार माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अध्ययन करना है। शोध कार्य के लिए शोधकर्ता ने यादृच्छिक विधि से जिला चमोली, उत्तराखण्ड के माध्यमिक विद्यालय के 154 छात्रों का चयन किया। डॉ. सुखवंत बाजवा और डॉ. मोनिका महाजन के वैज्ञानिक दृष्टिकोण पैमाने का उपयोग करते हुए, जिसमें (तर्कसंगतता, जिज्ञासा, खुले दिमाग, वैज्ञानिक पद्धति में विश्वास और अंधविश्वास के प्रति औसत) से संबंधित 49 आइटम हैं, डेटा एकत्र किया गया है और एसपीएसएस और एक्सेल द्वारा डेटा का विश्लेषण किया गया है, जिसमें निष्कर्ष निकाला गया है कि लिंग, स्थानीयता, संस्थान, माध्यम के आधार पर छात्रों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण महत्वपूर्ण पाया गया, जबकि छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रति धारा, वर्ग और परिवार के आधार पर कोई महत्व नहीं पाया गया।

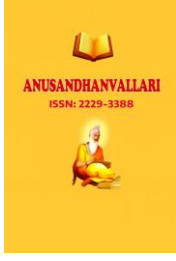
**विक्टोरिया, ज्योति (2023)** ने माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर एक अध्ययन शीर्षक का अध्ययन किया। वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य विज्ञान के प्रति छात्रों के दृष्टिकोण का अध्ययन करना है। वर्तमान अध्ययन का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण पर विद्यालय के प्रबंधन के प्रकार, इलाके और लिंग के प्रभाव की जांच करना है। विज्ञान की सफलता किसी विशेष पद्धति की तुलना में वैज्ञानिकों के सामान्य दृष्टिकोण से अधिक संबंधित है। यह रवैया पूछताछ, प्रयोग और तथ्यों के सामने विनम्रता का है। अविनाश ग्रेवाल द्वारा तैयार और नेशनल साइकोलॉजिकल कॉर्पोरेशन द्वारा प्रकाशित वैज्ञानिक दृष्टिकोण स्केल एक मानकीकृत उपकरण है जिसका उपयोग किसी छात्र के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को निर्धारित करने के लिए किया जाता था। पैमाने में 20 आइटम शामिल हैं। डेटा के विश्लेषण के लिए तेलंगाना के सरकारी और निजी स्कूलों के नौवीं कक्षा के 100 माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का एक नमूना परीक्षण नियोजित किया गया था। निष्कर्ष यह है कि निजी छात्रों में सरकारी छात्रों की तुलना में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का स्तर काफी अधिक था, ग्रामीण छात्रों में शहरी छात्रों की तरह ही वैज्ञानिक दृष्टिकोण का स्तर उच्च और निम्न था और महिला छात्रों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का स्तर कमोबेश समान था।

**सुधीर, आर. (2020)** 'माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण, योग्यता, ज्ञान का मापन' विषय पर शोध कार्य किया। इनके अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक विद्यालय के छात्रों का वैज्ञानिक दृष्टिकोण, वैज्ञानिक योग्यता और वैज्ञानिक ज्ञान को मापने के लिए। लिंग, कक्षा, माध्यम जैसे चरों के बीच महत्वपूर्ण अन्तर का पता लगाने के लिए। निष्कर्ष में पाया कि लिंग, कक्षा, माध्यम का वैज्ञानिक दृष्टिकोण, योग्यता, ज्ञान के बीच अन्तर पाया जाता है।

**शोध अन्तराल :-** वैज्ञानिक अभिवृत्ति पर पूर्व में हुए शोधों का अध्ययन करने पर शोधार्थी ने पाया कि पूर्व में जो भी शोध कार्य हुए हैं वे केवल सामान्य विद्यार्थियों एवं वैज्ञानिक अभिवृत्ति के साथ अन्य चरों को लेकर हुए हैं, परन्तु वैज्ञानिक अभिवृत्ति तथा एन.सी.सी. विद्यार्थियों पर एक साथ शोध का अभाव पाया गया। अतः शोधार्थी द्वारा चुना गया विषय नवीन होने के साथ-साथ शिक्षा के क्षेत्र में उपयोगी सिद्ध होगा ऐसा शोधार्थी का विश्वास है।

## 4.0 समस्या का औचित्य-

आज का युग विज्ञान का युग है। विज्ञान मानव को वचन बढ़ता स्वतंत्र रूप से पूछताछ करने की, सत्य की खोज, उच्चतम कर्तव्य और उत्तरदायित्व की भांति कार्य करने में दृढ़ता लाता है। यह कहरता के बन्धनों में डील लाता है। और भय एवं अन्धविश्वास, भाग्यवादिता एवं निष्क्रिय विचारों को दूर करने के लिए एक शक्तिशाली यंत्र की भांति कार्य करता है। तर्क एवं स्वतंत्र पूछताछ पर बल देने के द्वारा यह सिद्धांतकारी तनावों को कम करता है। वैज्ञानिक युग के साथ-साथ चलने के लिए वैज्ञानिक रुचि एवं क्षमताओं का बालकों में होना अत्यन्त आवश्यक है। वैज्ञानिक अभिवृत्ति के द्वारा ही देश को उच्चतम शिखर पर पहुँचाया जा सकता है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालक का सर्वांगीण विकास करना है एवं देश व समाज के लिए प्रतिभाशाली व्यक्तित्व का निर्माण करना है। अतः प्रस्तुत शोध के माध्यम से 'एन. सी. सी. के प्रशिक्षणार्थियों की



वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत शोध से प्राप्त परिणाम शिक्षा के क्षेत्र में सुधार लाने में सहायक सिद्ध होंगे। अतः प्रस्तुत शोध कार्य औचित्य पूर्ण है। इस विषय पर अध्ययन किया जाना आवश्यक प्रतीत होता है।

### 5.0 शोध के उद्देश्य

प्रस्तुत शोध के उद्देश्य निम्न प्रकार हैं—

1. उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत एन. सी. सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

### 6.0 शोध की परिकल्पनाएँ

- उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांक औसत स्तर के हैं।
- उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत एन. सी. सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

### 7.0 शोध विधि

प्रस्तुत समस्या के लिये शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया।

#### 7.1 शोध में प्रयुक्त चर :

प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित चरों का अध्ययन किया गया है —

#### स्वतंत्र चर :

- ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत एन. सी. सी. प्रशिक्षणार्थी।

#### आश्रित चर :

- वैज्ञानिक अभिवृत्ति

### 8.0 न्यादर्श

#### न्यादर्शन

पूरी जनसंख्या में से उनके प्रतिनिधि स्वरूप चुने हुए सदस्यों को न्यादर्श कहते हैं एवं इन न्यादर्श को चुनने की इस विधि को न्यादर्शन कहते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में प्रयुक्त न्यादर्शन विधि —

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु उद्देश्यपूर्ण न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध हेतु ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के 400 एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों का चयन प्रयोज्य के रूप में किया गया है।

#### न्यादर्श संरचना—

प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कुल 40 ऐसे विद्यालय जहाँ एन.सी.सी. हों वहाँ के कक्षा 11 एवं कक्षा 12 के 400 एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों को प्रयाज्यों के रूप में चयन किया गया। प्रत्येक एन.सी.सी. रखने वाले विद्यालय से 10 एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों का चयन कर कुल 400 एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों को चयनित किया जाएगा।

#### न्यादर्श का विवरण

विद्यालय	विद्यालयों की संख्या	एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की संख्या
शहरी विद्यालय	20	200
ग्रामीण विद्यालय	20	200
योग	40	400

### 9.0 शोध उपकरण :-

शोधार्थी ने, प्रस्तावित शोध कार्य में उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए वैज्ञानिक अभिवृत्ति के स्तर का पता लगाने के लिए डॉ. अविनाश ग्रेवाल द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत वैज्ञानिक अभिवृत्ति मापनी का प्रयोग किया ।

### 10.0 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी :-

प्रस्तावित शोधकार्य में मध्यमान, प्रमाप विचलन, टी-परीक्षण इत्यादि सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग किया गया।

### 11.0 शोध का परिसीमन

प्रस्तुत समस्या का निम्नानुसार परिसीमन किया गया :-

- प्रस्तुत शोध कार्य राजस्थान राज्य के टोंक जिले तक सीमित है।
- प्रस्तुत शोध कार्य में उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत कक्षा 11 एवं 12 के एन.सी.सी.प्रशिक्षणार्थियों को लिया गया है।

**12.0 आँकड़ों का विश्लेषण**

परिकल्पना संख्या 1. उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांक औसत स्तर के हैं।

सारणी संख्या 1.0

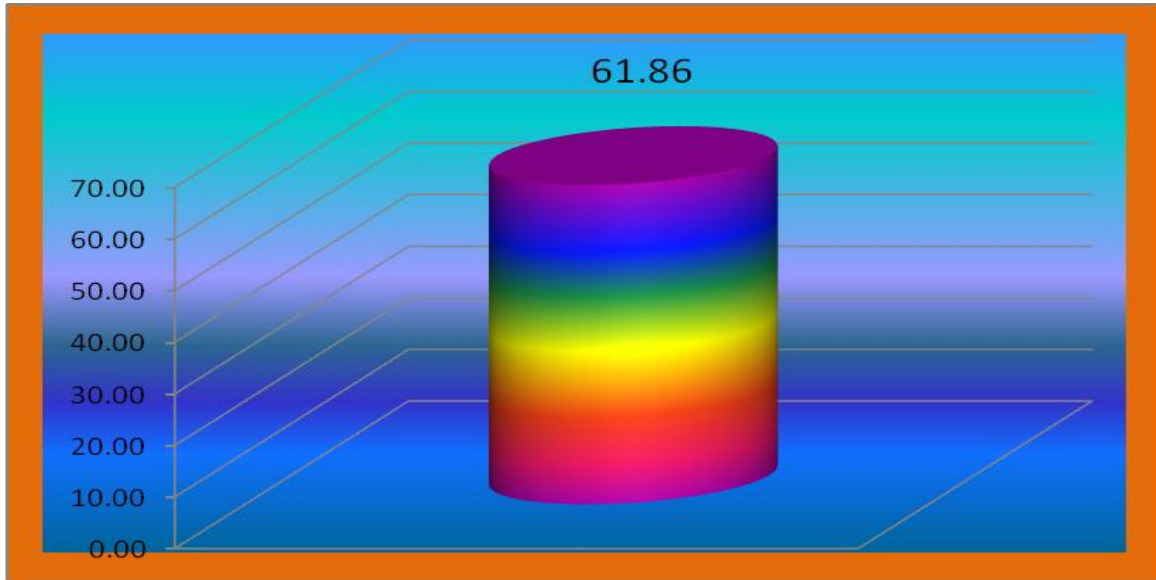
उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों के मध्यमान एवं मानक विचलन

वैज्ञानिक अभिवृत्ति	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन
	400	61.86	7.96

उपरोक्त सारणी संख्या 1.0 से परिलक्षित होता है कि उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति प्रमापनी से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 61.86 तथा 7.96 है। वैज्ञानिक अभिवृत्ति प्रमापनी के प्राप्तांकों का अधिकतम मान 80 ( 40'4त्र 80) तथा निम्नतम मान 0 ( 40'0त्र 0) तथा औसत मान 40 (80+0/2त्र 40) हैं। जिससे स्पष्ट है कि उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति प्रमापनी से प्राप्त प्राप्तांकों का मध्यमान 61.86 औसत मान 40 से अधिक है। इसलिए शोध की परिकल्पना संख्या- 1 उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांक औसत स्तर के हैं। अस्वीकृत की जाती हैं।

आरेख संख्या 1.0

उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों के मध्यमान



परिकल्पना संख्या 2. उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत एन. सी. सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

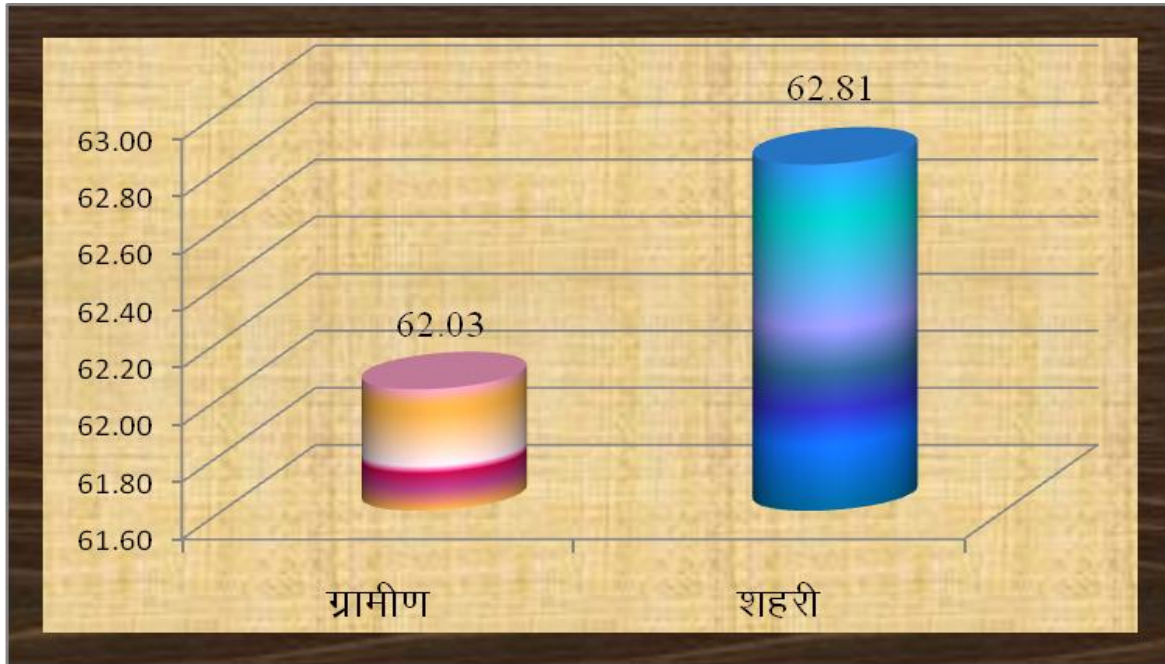
**सारणी संख्या 2.0**

उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत एन. सी. सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी मान

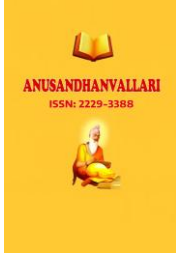
वैज्ञानिक अभिवृत्ति	क्षेत्र	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	टी-मान
कुल वैज्ञानिक अभिवृत्ति	ग्रामीण	200	62 <sup>०</sup> 03	8 <sup>०</sup> 43	<b>0.915</b>
	शहरी	200	62 <sup>०</sup> 81	8 <sup>०</sup> 74	

**आरेख संख्या 2.0**

उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत एन. सी. सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों के मध्यमान



उपरोक्त सारणी संख्या 2.0 से परिलक्षित होता है कि ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति प्रमापनी से प्राप्त वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 62.03 तथा 8.43 है तथा शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति प्रमापनी से प्राप्त वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मध्यमान एवं मानक विचलन क्रमशः 62.81 तथा 8.74 है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति प्रमापनी से प्राप्त वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों के मध्यमानों की तुलना करने पर शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति प्रमापनी से प्राप्त वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों के मध्यमान का मान ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति प्रमापनी से प्राप्त वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों के मध्यमान से कुछ अधिक प्राप्त हुआ। अतः शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति प्रमापनी से प्राप्त वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों का मान ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति प्रमापनी से प्राप्त वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों के मान से अधिक है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों के उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति प्रमापनी से प्राप्त वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांकों के मध्यमानों की तुलना करने पर अन्तर का टी-मान 0.915 है जो कि 0.05 सार्थकता स्तर पर सैद्धान्तिक टी-मान से कम है। इसलिए शोध की परिकल्पना संख्या- 2 स्वीकृत की जाती है जिसके अनुसार ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं होता है।



### 13.0 निष्कर्ष

1. उच्च माध्यमिक स्तर के एन.सी.सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति के प्राप्तांक औसत स्तर से अधिक हैं।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के विद्यालयों में अध्ययनरत एन. सी. सी. प्रशिक्षणार्थियों की वैज्ञानिक अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

### सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- [1] एडिगर मार्लो, राव डी भास्कर (2006), 'वैज्ञानिक योग्यता की तुलना में वैज्ञानिक दृष्टिकोण,' डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस द्वारा प्रकाशित।
- [2] बुच, एम.वी. (1983-88): शिक्षा में अनुसंधान का चौथा सर्वेक्षण, राष्ट्रीय परिषद (शिक्षा अनुसंधान 000 प्रशिक्षण, नई दिल्ली, खंड ८ और ८।
- [3] भान, सूरज और खंडूरी, गीता (2025) माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच वैज्ञानिक दृष्टिकोण का एक अध्ययन, जे. माउंटेन रेस. पी-आईएसएसएन: 0974-3030, ई-आईएसएसएन: 2582-5011 वॉल्यूम. 20(1), (2025), 441-447